सोलह सुमन पदावली

प्रथम एवं द्वितीय खण्ड

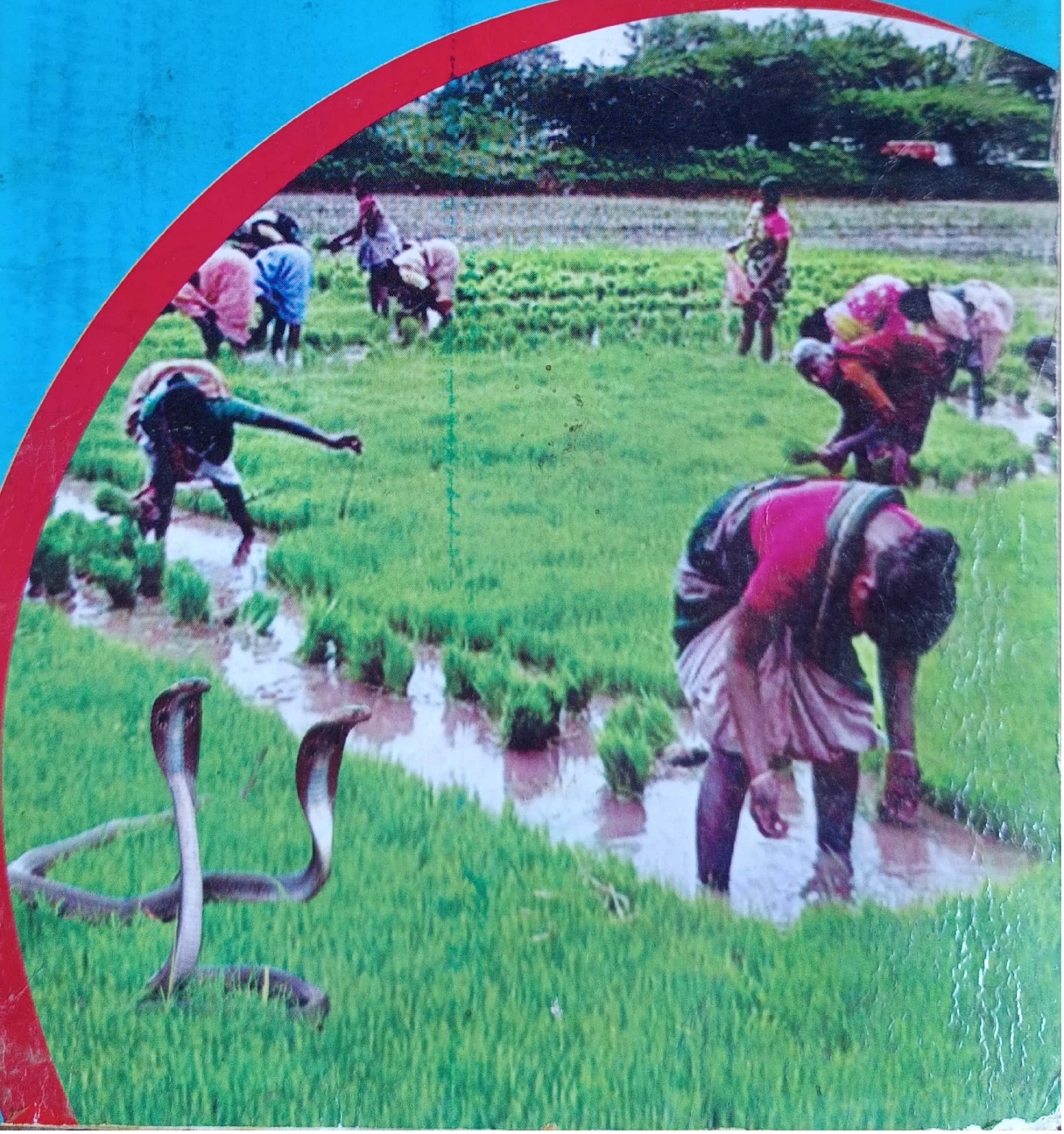

Scanned with OKEN Scanner

कविताप्रिय लोगों को समर्पित

Scanned with OKEN Scanner

"सोलह सुमन पदावली"

प्रथम एवं द्वितीय खण्ड

मो० 8757040103

सोलह सुमन पदावली
प्रथम एवं द्वितीय खण्ड
लेखक एवं प्रकाशक झौली पासवान जन संस्कृति मंच, मधुबनी

मंत्रिमंडल सचिवालय (राजभाषा) विभाग, बिहार पटना के अंशानुदान से प्रकाशित

प्रथम संस्करण : 2016-2017 ई०
मूल्य : ₹ 120/-
मुद्रित प्रतियाँ : 500 (पाँच सौ) प्रतियाँ

मुद्रक-कैमूर जगमोहन ऑफसेट प्रेस
लंगरटोली चौराहा पटना-4

Scanned with OKEN Scanner

1. नाम - **झौली पासवान**

योग्यता-स्नातक, एल०एन० मिथिला यूनिवरसिटी, दरभंगा आवासीय

पता- ग्राम- वरिसायर, थाना-सकरी जिला - मधुबनी (बिहार)

2. 2001 से प्रभात संस्था वर्दीवन मधुबनी के माध्यम से दलित (मुसहर) बच्चों को पढ़ाना तथा सामाजिक स्तर पर शैक्षिक जागरूकता प्रदान करना ।
3. संस्थागत काम करते हुए 2003 से 2005 तक N.C.D.H.R.M में राष्ट्रीय दलित मानवाधिकार अभियान में Monitoring कार्य संपादन ।
4. मैथिली फील्म गैरीबक बेटी'' का पट कथा लेखन
5. रमेश रंजन निर्मित मैथिली फील्म हमर मिथीला'' में पिता का रॉल निभाया गैरीबक बेटी ''और'' हमर मिथिला'' में मेरा नाम जे० पी० कौशिक अर्थात् जय प्रकाश कौशिक
6. NEG (New Education Group) दिल्ली के सहयोग से प्रभात संस्था द्वारा प्रकाशित बाल पत्रिका ''खिलते फूल'' के प्रकाशन में सक्रिय भूमिका ।
7. कारितास इंडिया के सहयोग से प्रभात संस्था द्वारा संचालित ''रोशनी'' कार्यक्रम के तहत मुसहर बालिकाओं में शैक्षिक जागरूकता लाने का कार्य
8. बर्त्तमान में दलित मुहल्लों में टयूशन के रूप में कार्य करना और उनमें शैक्षिक सुधार लाना ।

कृति :- 1 ''सोलहसुमन'' कविता संग्रह राजभाषा बिहार सरकार द्वारा अनुदानित पुस्तक (प्रकाशित) 2016-2017

प्रकाशन के क्रम में)

2. ''गोपीकिसन किसन'' हिन्दी उपन्यास - (अप्रकाशित)
3. ''माँ की आँचल'' हिन्दी कविता संग्रह - (अप्रकाशित)
4. ''माटीक सुगंध'' मैथिलीपद्य संग्रह - कविता संग्रह (अप्रकाशित)
5. विश्वकर्मा बेदखल (हिन्दी काव्य)

Scanned with OKEN Scanner

आमुख

प्रकृति के गोद में विचरण करने वाले मनुष्य हर हमेशा सत्य असत्य एवं नवीनता से जुड़ते रहते हैं। सत्य करूआ तो अवश्य होता है लेकिन उस करूआहट के कारण सत्य का विनाश नहीं होता है। लाख छुपाने के वाद भी सत्य प्रकाश में आ ही जाता है। मेरा समस्त जीवन ग्रामीण परिवेश में बीता। जीवन भर करूआहट का दंश झेलने के बावजूद भी मैं ने सत्य को स्वीकार करते हुए प्राकृतिक सुन्दरता का आनन्द लेता रहा और सदा ही मानव-मानव को दिल से जोड़कर देखा क्यों कि मानव प्रकृति की सब से श्रेष्ठकृति है। यह भाव "सोलह सुमन" के प्रथम पद्य वन्दना से स्वत: प्रमाणित होता है। बहरहाल मेरा लगाव सतत् उस वर्ग से रहा जो सदियों से उपेक्षित रहा है। प्रस्तुत कविता "सोलह सुमन" में सत्य को स्वीकारते हुए भारतीय समाज को एकता के सूत्र में बाँधने का भरपूर प्रयास किया गया है। "सोलह सुमन" उन तमाम कमजोर तथा वंचित वर्गों का प्रतिनित्व करता है जिन्हें सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक विकास से एक साजिस के तहत रोका गया।

उन्हें तोड़ने के लिए उन्हें विभिन्न नामों से अभिहित (चिन्हित) किया गया जिनमें से एक नाम (सोलकण) सोलह कण भी है। यह नाम 'सोलकण' समाज को एक दूसरे से तोड़कर रखने वाला है। अत: मैं ने भारतीय समाज को एकता के सूत्र में बाँधने के लिए अपने संग्रह का नाम "सोलह-सुमन" रखा है। इस कविता का आन्तरिक भाव भारत में अनेकता में एकात की भावना को बनाये रखना है जो संग्रह में जिगर के फूल" शीर्षक कविता से प्रमाणित होता है। आशा है कि पाठकगण संग्रह में वर्णित कविताओं के आन्तरिक भावों को अपनाकर पसंद करेंगे। प्रकृति का नियम है कि एक ही चीज किसी को अच्छा और किसी को बुरा लगता है। यदि इस संग्रह के किसी शब्द या वाक्य से व्यक्ति या समाज को ठेस पहुँचे तो मैं क्षमाप्रार्थी हूँ। अन्त में मैं अपनी धर्म पत्नी श्रीमति रेणू देवी को धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने विषम परिस्थितियों में भी मुझे प्रोत्साहित किया। सुपुत्र स्वतंत्र कुमार, सिद्धार्थ कुमार, सुपुत्री प्रतिभा और पूनम धन्यवाद के पात्र है। साथ ही मैं प्रभात संस्था के निदेशक फादर् टॉनी का भी शुक्रगुजार हूँ जिन्होंने सदा ही मुझे लिखने के लिए प्रेरति करते रहा।

जय भारत

जय भारती

❑❑❑

Scanned with OKEN Scanner

"सोलह सुमन पदावली"

प्रस्तुत पदावली 'सोलह सुमन" झौली पासवान जी द्वारा रचित अनुपम काव्य कृति है जिसमें बिम्ब, संकेत एवं सरल शब्दों का यथोचित समायोजन है। सुख-दुख या उत्थान-पतन के बीच से गुजरता हुआ मनुष्य का जीवनचक्र अविरल धारा के रूप में प्रवाहित होता रहता है जिसमें राग, धुन और लय समाहित रहता है। मानव के हृदय स्थली में संचित यही मनोभाव बिम्ब या संकेत के रूप में प्रस्फुटित होकर कविता का रूप धारण करता है जिसे कवि कलम बद्ध करके पाठकों के बीच प्रस्तुत करता है। कविताओं में गेय धार्मिता, वीर रस एवं श्रृंगाररस का पुट रहता है। जो कविताओं को रूचिपूर्ण बना देता है। मानव के सर्वांगीण विकास के मार्ग में अनेक बाधाएँ उत्पन्न होती है। जिसे मनुष्य मिटाना चाहता है उसे प्रकृति संरक्षण देता है। कवि का कहना है कि प्रकृति में सभी जन एक हैं तो मानवीय व्यवहार प्रकृति के विपरीत क्यों हो रहा है ? मनुष्य तो प्रकृति की श्रेष्ठतम कृति है। इन भावों को कवि अपनी कविता "जिगर के फूल" में इस प्रकार व्यक्त किया है:-

ईंटे पर ईंटा, जगत पर दूब।
कुदरत ने दुनियाँ बनाया क्या खूब !
नीचे गगन के सुन्दर बगीचा।
शूल-फूल एक मूल रस से है सींचा
हम उन के बन्दे का क्या हो वोसूल।
कुदरत ने दुनियाँ बनाया क्या खूब !

ये पंक्तियाँ हमें यह सोचने के लिए विवश करता है कि कवि अपने समाज, प्रदेश या देश में मानव-मानव में भेद-भाव देखा होगा जिसका उसके हृदय में अमिट छाप बन गया होगा। वही छाप संकेत के रूप में प्रस्फुटित होकर कविता का रूप धारण कर लिया। कविता में गेय धार्मिता एवं भाव की सरलता है जो कवि का सराहनीय प्रयास है।

पदावली में रचित हर कविता पाठकों में अगली कविता को पढ़ने की भूख को जगाता है।" मानव जब जोड़ लगाता है, पत्थर पानी बन जाता है" अर्थात् अपने प्रयास से मनुष्य कुछ भी कर सकता है। उनके नजर में मानव का कर्म ही सबसे बड़ी पूजा है। अध्यवसाय के बल पर मानव आज उन्मुक्त आकाश में विचरण करता है। "साधना" शीर्षक कविता में कवि ने इसे इस प्रकार व्यक्त किया है:-

इहलोक वही, पर लोक वहीं।
जन-जीवन का आलोक वही ॥
सारा चेतन संसार वही।
भगवद्गीता का सार वही ॥
वह साधना कितनी बड़ी ?
सब से बड़ी वह साधना

वास्तव में लगातार किया गया प्रयास हीं मानव को सफलता की सोपान पर पर

Scanned with OKEN Scanner

विराजमान कर देता है । भगवान कृष्ण ने अर्जुन से कहा था-हे अर्जुन ! मनुष्य के कर्म के फल को स्वयं मैं भी नहीं रोक सकता हूँ । आगे कवि ने स्वीकार किया है कि किसी भी क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए अनुशासन की आवश्यकता है । प्रस्तुत है अनुशासन के संदर्भ में कवि की अगली कविता चींती''

अनुशासन की डोर चीटियाँ
गिनती नहीं असंख्य चीटियाँ
छोटी, मझली बड़ी चींटियाँ
एक लगन की सभी चींटियाँ
अण्डज, पिण्डज शैशव चीटियाँ ।
बनी कतार सैनिक सी चींटियाँ ।।

इन पद्यों में एक नन्हीं चींटी की तुलना सैनिक से करके इन्होने अनुशासन के महत्व को और अधिक मुखर कर दिया है जो कवि के अनुशासन प्रियता का प्रमाण है ।

आज मानव इतना स्वार्थी हो गया है कि अपने हाथ के कुल्हाड़ी से अपने हो जंधा पर प्रहार कर रहा है । वे प्रकृति के साथ खिलवार करके पर्यावरण को दूषित कर रहे हैं जिसका दुष्पपरिणाम मानव भोग रहा है :-

प्रस्तुत है पदावली में समाहित कविता ''कहर''

आधार था, आधार हूँ ।
जीवन-मरण पर्यन्त मैं ।।
तेरा ही सच्चा यार हूँ ।
परिवार, ग्राम या हो समर ।।
जग को अर्पित मैं आठ पहर ।
नर ठहर ! ठहर ! कर बन्द कहर ।
मत बोल थाल में और जहर ।।

आज मानव अंधाधुंध पेड़ों की कटाई कर रहे हैं जिससे जीव जन्तु ही नहीं मानव जीवन पर भी खतरा उत्पन्न हो रहा है ।

अन्त में मैं कहना चाहता हूँ कि **''सोलह सुमन'' पदावली** पाठकों के अन्तरमन को छूता हुआ जनसरोकार एवं प्रकृति के बीच संबंध स्थापित करता हुआ एक अनुपम काव्य कृति है जिसमें शब्द सरलता, यथोचित बिम्ब एवं संकेतों का समायोजना है । मैं इस उत्तम काव्य कृति की रचना के लिए कवि को बधाई देता हूँ ।

बाबूलाल तिवारी

Scanned with OKEN Scanner

विषय - सूची

सोलह सुमन प्रथम खण्ड

क्र. सं.	शीर्षक	पेज नं.	क्र. सं.	शीर्षक	पेज नं.
1.	वरदान	1	19.	अम्मा	26-27
2.	"जिगर के फूल"	2	20.	तूफाँ	28-29
3.	"साधना"	3-4	21.	नव किसलय	30
4.	"मातृभूमि"	5-6	22.	प्रतियोगिता	31
5.	"चींटियाँ"	7-8	23.	संसार सरल	32
6.	"कामायनी"	9-10	24.	इकबाल	33
7.	"कहर"	11-12	25.	भाग्य विधाता	34
8.	"पुरातन पगडंडी"	13	26.	काला नाग	35-38
9.	"प्रश्न चिन्ह"	14-15	27.	चिन्तन	39
10.	"घोड़ा"	16	28.	कातिल	40
11.	"भानु"	17	29.	अनवर	41
12.	"आलिंगन"	18	30.	विकास का प्रतीक	42
13.	"कन्यादान"	19	31.	अटारी से नीचे	43
14.	"सरस्वती संतान"	20-21	32.	नर पिशाच	44
15.	"मधुशाला"	22			
16.	"कीचड़"	23			
17.	"जय भारत"	24			
18.	"बाती"	25			

Scanned with OKEN Scanner

सोलह सुमन पदावली प्रथम खण्ड

वरदान

त्रुटिपूर्ण पूजा विधि सही,
करबद्ध हूँ, नत शीष है ।
हे कण-कण में व्याप्त प्रभु, !
दे नजर मुझे जानूँ तुझे ।

मिट जाय बन्धु बांधव दूरी,
दिल की तमन्ना हो पूरी ।
दे दो मुझे वरदान प्रभु,
रहे सबल प्रेम की धूरी ।

यह प्रेम ऐसा हो सबल,
वह सके प्रेम धारा अविरल ।
भारत माता के आँचल में,
सिमटे जगत की दूरी ।

दस शीष मगर दिल एक रहे,
सब को इसका एहसास रहे ।
दे दो मुझे वरदान प्रभु,
मुझे प्रेम भरा संसार मिले ।

नोट :- सच्चे हृदय से ईश्वर की वंदना का भाव दर्शाया गया है। आपसी प्रेम-भाव और बन्धुत्व की भावना से राष्ट्रीय एकता की कामना की गई है ।

❑❑❑

Scanned with OKEN Scanner

जिगर के फूल

ईंटे पर ईंटा जगत पर दूब ।
कुदरत ने दुनियाँ बनाया क्या खूब ।।
नीचे गगन के सुन्दर बगीचा ।
शूल, फूल एक मूल रस से है सींचा ।।
हम उनके बन्दे का क्या हो वोसूल ।
कुदरत ने दुनियाँ बनाया क्या खूब ।।
धर्म हैं अनेक रूप-रंग में अनेकता ।
लोहू का रंग लाल सब में एक ही सहेजता ।।
हिन्दियों का रूप है अनेकता में एकता ।
बँट न सकेगा कभी भारत की एकता ।।
बाणी की तार सब में एक ही जरूर ।
कुदरत ने दुनियाँ बनाया क्या खूब ।।
हैं तो विलीन फिर भी माली निहारते ।
एक ही दुलार से वे सब को पुकारते ।।
बन्दे हमारे बसुन्धरा के तारे ।
खिलते चमन में सभी प्यार-प्यारे ।।
माता के प्यारे जिगर के फूल ।
कुदरत ने दुनियाँ बनाया क्या खूब ।।
माँ के धरोहर हे हिन्दी सिपाहियों ।
हिन्दुन्मुसलमान शान सिक्खों इसाईयों ।।
माता का आबरू सदा सिर पर ढ़ोना ।
केवल पसीना नहीं खून भी बहाना ।
दीगर न कोई सब है तेरे महबूब ।
कुदरत ने दुनियाँ बनाया क्या खूब !

नोट :- इस कविता में प्रकृति से मानवीय व्यवहार एवं सिद्धान्त को जोड़कर अपने देश के भीतर अनेकता में एकता स्थापित कर, बन्धुत्व की भावना को अपनाकर देश भक्ति की भावना को उजागर किया गया है। यह कविता राष्ट्रीय एकता की भाव को उजागर करता है ।

Scanned with OKEN Scanner

साधना

इह लोक वही, परलोक वही ।
जन-जीवन का आलोक वही ।।
सारा चेतन संसार वही ।
भगवद्गीता का सार वही ।।
वह साधना कितनी बड़ी ?
सब से बड़ी वह साधना ।।
जो हर्ष से स्वीकारती ।
श्रद्धा सुमन हर हाथ से ।।
साधक के लिए न कछु बाधक ।
वह सब से बड़ी अराधना ।।
वह साधना कितनी बड़ी ?
सब से बड़ी वह साधना ।।
साधक महा एकलव्य था ।
जग शूद्र कहते हैं जिसे ।।
चकित किया संसार को ।
साकार हुई जब साधना ।।
वह साधना कितनी बड़ी ?
सब से बड़ी वह साधना ।।
बिना तार का तार वही ।
जग से करवाती बात वही ।।
जीव-श्रेष्ठ जग मानव को ।
नभ में टहलाती साधना ।।
वह साधना कितनी बड़ी ?
सब से बड़ी वह साधना ।।
सदा गिरे को यही उठाती ।

Scanned with OKEN Scanner

मूरत को करतब सिखलाती ।।
खड़ी चांद पर नर उतार कर ।
मुसकाती वह साधना ।।
वह साधना कितनी बड़ी ?
सब से बड़ी वह साधना ।।

नोट :- इस कविता में मानव के सर्वांगीण विकास के लिए अभ्यास के महत्व को दर्शाया गया है । श्रीमद् भगवद्गीता का सार तत्व कर्म ही है । जो लगातार परिश्रम करता है उसके लिए कोई कार्य असंभव नहीं एक लव्य साधना के बल पर ही संसार में ख्याति प्राप्त किया था । वायरलेस, रोबोट तथा अनेक प्रकार के विमान लगातार प्रयास का ही प्रतिफल है । गिरे हुए या निचले तबके से जीवन यापन करने वाले लोग भी उच्च पराकाष्ठा को प्राप्त कर सकते हैं ।

❑❑❑

Scanned with OKEN Scanner

मातृभूमि

तरूवर विशाल वह जामुन का ।
कल-कल पावन जल भरा तडाग ।।
गली-गली दुकान पान का ।
यत्र-तत्र कानन रसाल ।।
मिथिलॉचल के पंडौल प्रखंड ।
बड़की पोखर बीरसायर ग्राम ।।
रक्तिम नीरज सुमन मलकोंका ।
थिरकत नीर हवा के झोंका ।।
क्रीड़ा मीन, उड़ान पन कौआ ।
चहचह राग सुनावत चाहा ।।
उत्तर भारत राज्य बिहार में ।
जिला मधुबनी मिथिला धाम ।।
सिल्ली सेंकत धूप सवेरे ।
कच्छप बैठे तट सीना तान ।।
गागर में सागर का दर्शन ।
हस्तकला का कीर्ति महान ।।
मधुश्रावणी और कोजेगरा ।
जिस अंचल का पर्व महान ।।
सम्राट हास्य कवि गोनू झा ।
कवि कोकिल विद्यापति महान ।।
पद दलित नहीं उच्चासन पर ।
यह सदा विराजित मिथिला धाम ।।
यज्ञाहूति प्रज्वलित आठो याम ।
हे मातृ-भूमि शत-शत प्रणाम ।।

Scanned with OKEN Scanner

जनक विदेह का धराधाम ।
जहँ पग धाये सीता पतिराम ।।
उगना रूप धराये शंकर ।
को नहि जानत सकल जहान ।।

जय मिथिला जय मैथिल महान ।
हे मातृ-भूमि शत-शत प्रणाम ।।

नोट :- इस कविता के माध्यम से अपने गाँव की प्राकृतिक सुन्दरता एवं मिथिलाकी गौरवशाली परम्पराओं का वर्णन किया गया है । मिथिला हास्य कवि गोनू झा कवि कोकिल विद्यापति विदेह जनक जैसे महापुरुषों का पूण्य भूमि है ।

❑❑❑

Scanned with OKEN Scanner

चींटियाँ

अनुशासन की डोर चींटियाँ ।

गिनती नहीं असंख्य चींटियाँ ।।

अण्डज, पिण्डज, शैशव चींटियाँ ।

बनी कतार सैनिक सी चीटियाँ ।।

छोटी, मझली, बड़ी चीटियाँ ।

एक लगन की सभी चींटियाँ ।।

बर्त्तन में घोले गोबर-माटी ।

धुन की पक्की कद की नाटी ।।

मन ही मन गुन-गुना रही थी ।

घर का आंगन लीप रही थी ।

सजी-धजी गुड़िया सी सीमा ।

पास खड़ी उसकी दादी माँ ।।

क्षणिक ठिठक सी गई चींटियाँ ।

राह बदल फिर चली चींटियाँ ।।

कछुक लिए मुँह कण अनाज की ।

कछुक लिए मुख पंख तितलियाँ ।।

गोबर मिट्टी मिश्रित मित्ती ।

रेखांकित कर चली चींटियाँ ।।

वह फांसी पर झूल रहा था ।

Scanned with OKEN Scanner

मौत से हड्डा जूझ रहा था ।।

सभी उठाकर अर्थी उसकी ।

श्मशान तक चली चींटियाँ ।।

बँधी एकता डोर चींटियाँ ।

धुन की बड़ी कठोर चींटियाँ ।।

नोट :- इस कविता में चींटी के माध्यम के माध्यम से एकता के महत्व को दर्शाया गया है। एकता के बल से बड़े-बड़े कार्यों को भी आसामी से किया जा सकता है। साथ मिथिलांचल के लड़कियों की घरेलू कार्यशीलता तथा तत्परता को भी दर्शाया गया है।

❑❑❑

Scanned with OKEN Scanner

कामायनी

घन घोर घटा बन मोरनी निकली ।
गति बुलबुल पिक रागिनी ॥
नव नाजिनी नूतन बसन ।
दिल के प्रियतम की कामिनी ॥
आतुर नयन थिरकत कदम्ब ।
नव गात भरी मद्मातलि ॥
बीते डग पहर पहर, डग बाँकी ।
मुखर हुआ मन पूनम झांकी ॥
मिटा डगर डर पास पड़ोसन ।
बिहंसत डगर चलत मन मानी ॥
साड़ी दबावत दन्त नारी ।
सहज अबाध स्वर किलकारी ॥
भा भोर के तारे उदित ।
एकाध पहर बाँकी समाकी ॥
तन छिटकत आभा न्यारी ।
विद्युत आवेश लजावनी ॥
सपने सजाकर वह चली ।
छोड़त डगरी को खाली ॥
खुला भ्रमर पट रून-झुन स्वर ।
लखि उभय कपोल सुधा बरसे ।
भा सुधि बिहीन विलीन उर प्रियतम ।

Scanned with OKEN Scanner

सिमट गई अभिसारिनी ।।

ओट जलज मुसकत चन्दा ।

पेखत क्रीड़ा कामायनी ।

नोट :- इस कविता के माध्यम से एक प्रेमिका के गतिविधि को चित्रित किया गया है । उसके सुन्दरता का वखान किया गया है ।

❑❑❑

Scanned with OKEN Scanner

कहर

आधार था, आधार हूँ ।
जीवन भरण पर्यन्त मैं ।।
तेरा ही सच्चा यार हूँ ।
परिवार ग्राम या हो समर ।।
जग को अर्पित मैं आठ पहर ।
नर ! ठहर ! ठहर !! कर बन्द कहर ।
मत घोल थाल में और जहर ।।
रचा समीर मंडल को मैं ।
जगती को शीतल हवा दिया ।।
हो जाता जग का रूद्ध स्वास ।
दिनकर की लौ से जल जाता ।।
मैं पीता हूँ जग व्याप्त जहर ।
नर ! ठहर ठहर !! कर बन्द कहर ।
मत घोल था में और जहर ।।
उत्तर की आतुर सरिता से ।
आती इठलाती तेज लहर ।।
पगतल की मिट्टी खिंच जाती ।
मच जाता जग में महा कहर ।।
रक्षित है मुझ से ग्राम शहर ।
नर ! ठहर ! ठहर !! कर बन्द कहर ।
मत घोल थाल में और जहर ।।
पर मूक हूँ जग देखकर ।

Scanned with OKEN Scanner

अन्याय नर की आठ पहर ।।

जो भोगता फल-फूल है ।

करता कुठाराघात वही ।।

क्यों ढ़ा रहा मुझ पर कहर ?

नर ! ठहर ! ठहर !! कर बन्द कहर ।

मत घोल थाल में और जहर ।।

❑❑❑

Scanned with OKEN Scanner

पुरातन पगडंडी

पुरातन तगडंडी,
युग-युग निहारती दो सवारी ।
प्रथम तो है मौन,
लेकिन शान से दूजी सवारी ।
कब चलती कब रूकती गाड़ी,
राज यह किसको पता !
पर है पता कि पगडंडी तक
ले आती है एक सवारी ।
न पता कहाँ ले जाती,
शान से दूजी सवारी ।
है सुख दुख की रस्सा कशी,
पिसती कराहती जिसमें राही,
किस मंजिल तक ले जाती,
क्या देती वहाँ ? दूजी सवारी ।
कौन सी उपयुक्त है ?
मेरी सवारी न पता ।
क्यों मौन है? किस ज्वाला में ?
तपती बेचारी न पता ।

नोट :- इस कविता में जीवन-मरण के रहस्य का वर्णन के साथ ही मौत को कटु सत्य के रूप में प्रमाणित किया गया है ।

❑❑❑

Scanned with OKEN Scanner

प्रश्न चिन्ह

विश्वकर्मा आधुनिक युग की ।
गौरव विज्ञान जगत की ।।
जग अहर्निश नव श्रृजनरत ।
विजेता अन्तरिक्ष भू-पटलकी ।।

कम्पन जगत जय द्योष की ।
गूँजता बसुन्धरा से गगन तक ।।

क्षण भर ठहर पीछे पलटकर देख ले ।
मूल्यांकण कर ले अपनी रचना की ।।
पहले की रूक जाये तेरी निर्झरनी ।
लग जाये इस पर प्रश्न चिन्ह ।।

अध्याय में एक सार पद ।
छूटा उपहार अंकित कर ले ।।

तूँ देख भृकुटी खोलकर ।
खिंचती जमी उस ठौर की ।।
अवलम्ब जो जन-जीवन का ।
अवलम्बित जिस पर रचना तेरी ।।

वह पात्र खाली हो रहा ।
संत्रस्त प्राणी रो रहा ।।

देख ले आतुर नयन की टकटकी ।
उस रूग्न पर्यावरण की ।।
जेता दिग्गन्त वसुन्धरा की ।

Scanned with OKEN Scanner

इस की भी इलाज कर दे ॥

रिक्त है वह ठौर जग का ।

तेरे ही पद गमन तक ॥

नोट :- इस कविता के माध्यम से पर्यावरण के सुरक्षा की ओर वैज्ञानिक के ध्यान को आकृष्ट किया गया है ।

❑❑❑

Scanned with OKEN Scanner

घोड़ा

सदा समय का घोड़ा टिक-टिक ।
दिन या रात भगोड़ा टिक-टिक ।।
ऐसे घोड़ा को पहचान ।
कर पाआगे जग में नाम ।।

इसका कोई शत्रु नहीं है ।
इसका कोई मित्र नही है ।।
दिल की धड़कन इसको जान ।
कर पाओगे जग में नाम ।।

भूत-भविष्य का डोरा टिक-टिक ।
वर्त्तमान झकझोरा टिक-टिक ।।
ऐसे डोरा को पहचान ।।
कर पाओगे जग में नाम ।।

यह सरपट भागा जाता है ।
देख प्रलय न घबराता है ।।
सीखो इससे करना काम ।
कर पाओगे जग में नाम ।।

सदा समय का घोड़ा टिक-टिक ।
करो काम क्षण थोड़ा टिक-टिक ।। +
ऐसे घोड़ा को पहचान ।
कर पाओगे जगमें नाम ।।

नोट :- इस कविता के माध्यम से समय के महत्व पर प्रकाश डाला गया है ।

❑❑❑

Scanned with OKEN Scanner

भानु

पहाड़ों की चोटी पर,
तरूवर की फुनगी पर,
लाल-लाल किरणें लिये भानु आया ।
चहक उठीं चिड़ियाँ,
खिल गई कलियाँ,
जोश में बेहोश हुई नन्हीं तितलियाँ ।
दुबकी थी कुतिया,
उसे जान आया ।
निर्मल किरण जब धरा में समाया ।
बिलीन हुए घास पर,
बिछाये जो मोती,
चला बाल पढ़ने को ले हाथ पोथी ।
दुबके रहे कोने में,
चोर और उचक्का ।
जब तक क्षितिज में दिवाकर का चक्का ।
सूर्य हँसते गुजरते,
हो निर्भय गगन
फूल-काँटे भी करते हैं उनका नमन ।
उनके हँसने से
हँसता है सारे जहाँ
उनके हँसने से अंगराई लेता चमन ।

नोट :- इस कविता के माध्यम से जनजीवन के लिए सूर्य की महिमा का गुण-गान किया गया है ।

Scanned with OKEN Scanner

आलिंगन

मुसीबतें खौफ हों कितनी ।
समा लाये घटा जितनी ॥
टटोलते भले पगडंडियाँ ।
कर्मवीर आगे बढ़ता है ॥

डग पर खाई मिलती है ।
क्षणिक तन्हाई मिलती है ॥

पगतल चुभन कंटक की ।
न डर है ठेस ठोकर की ॥
काली घटा को चीर वही ।
नव ज्योति लाता है ॥

सरिता बनकर बहता है ।
वही मर कर भी जीता है ॥

गिरता है फिर उठता है ।
पुनः राहें पकड़ता है ॥
रिसते रूधिर को देख ।
मन में जोश भरता है ॥

कर्म से पट जाता है खाई ।
तब सच्चाई मिलती है ॥

करता उसी का आलिंगन ।
अरूणोदय की पहली किरण ॥
जन जन करता उन्मुक्त विचरण ।
तन्हाईयाँ मिट जाती है ॥

कर्म पहचान बनता है ।
मनुज का शान बनता है ॥

Scanned with OKEN Scanner

कन्यादान

देखो एक युगल जोड़ी की ।
यह कितनी बड़ी बिडम्बना ।।
एक घर खुशियों की वर्षा ।
एक बेच रहा घर अंगना ।।

सब कहते कन्यादान इसे ।
वरदान कभी जाना नहीं ।।

है कोई ठोस प्रमाण नहीं ।
सम्मान मिले अरमानों को ।।
एक बाप देखता बाप के ।
अरमानों की जलती चिता ।।

सब कहते कन्यादान इसे ।
वरदान कभी जाना नहीं ।।

साक्षी ओझल भगवान ।
साक्ष्य हैं पंच परमेश्वर ।।
सात फेरे हैं लगाते मंडप पर ।
सातों जनम निभाने को ।।

सब कहते कन्यादान इसे ।
वरदान कभी जाना नहीं ।।

न निभा पाते एक जनम भी ।
टूट जाते हैं प्रतिज्ञा झूठे फेरे सात भी ।।
स्तब्ध हैं कुल देबियाँ ।
शिथिल प्रशासन ताड़ भी ।।

सब कहते कन्यादान इसे ।
वरदान कभी जाना नहीं ।।

□□□

झौली पासवान

Scanned with OKEN Scanner

सरस्वती संतान

हे! भारत के रत्न अलौकिक ।
हे जन-जन के शान महान ।।
त्याग और बलिदान तुम्हारा ।
जगमग सकल जहान ।।

जोड़ूँ कर युगल नमन करूँ ।
हे सरस्वती संतान महान ।।

उन्नत ललाट, उन्नत काया ।
तव हिय विशाल, मानस विशाल ।।
भारत हृदय विशाल सजाया ।
पकड़ा कभी खड़ग न ढ़ाल ।।

जोड़ूँ कर युगल नमन करूँ ।
हे! सरस्वती संतान महान ।।

लोचन छल कत अनुराग देश का ।
ओट सतत सुमधुर मुस्कान ।।
कर में था संघर्ष तुम्हारा ।
मनोभाव भारत कल्याण ।।

जोड़ूँ कर युगल नमन करूँ ।
हे ! सरस्वती संतान महान ।।

नमन तुझे सकपाल दुलारा ।
भारत हृदय विशाल दुलारा ।।
अमिट रहे पढ चिन्ह तुम्हारा ।
मानवता के शान महान ।।

Scanned with OKEN Scanner

जोड़ूँ कर युगल नमन करूँ ।

हे ! सरस्वती संतान महान ।।

तूँ कर्मशील, तूँ धर्मशील ।

अध्ययनशील जीवन भर ।।

संघर्षशील, निर्माणशील ।

तव क्षेत्र न कोऊ दूभर ।।

जोड़ू कर युगल नमन करूँ ।

हे ! सरस्वती संतान महान ।।

❑❑❑

Scanned with OKEN Scanner

मधुशाला

कितना मधुर ! कितना सरस ।।

यह कोमल स्वर मधुशाला ।

यह सूचना का केन्द्र भी ।

मद् लोलुप का मधुशाला ।।

कुछ बातें ओझल मानसका ।

बतला देती है मधुशाला ।।

कुछ बातें मानस पटल से ।

ओझल करती मधुशाला ।।

वह पौरुष का एहसास लिए ।

अंगराई लेकर आया ।।

थक कर चकनाचूर निराश ।

वह बोझिल होकर आया ।।

दोनों आए मधुशाला में ।

दोनों ने पाया सकुन यहाँ ।।

वह चल दिया मधुपान कर ।

वह चिपक गया मधुशाला से ।।

झौली पासवान

❑❑❑

Scanned with OKEN Scanner

कीचड़

नील गगन के नीचे जिसका ।
घर था शहर जमीं पर ।।
कर भर कातिल लूटा युग-युग ।
सतत उछालकर कीचड़ ।।

तन जिसका जलता था दिन भर
दिनकर की प्रखर किरण से
समा शीत में ठिटुर-ठिकुर
भंडार भरा था जिसने

तन के गोरे मन के काले
क्या दे पाया हक उसका ।
हर संभव निर्माणों में ।।
था बहा पसीना जिसका ।

मांगा जब अधिकार न मिला ।
कातिल कहा जमाना
क्या सुख से वह भोग पायगा
लोहू से भरा खजाना ।

यह प्रश्न है एहसास का ।
स्वीकार ले हिय हाथ रख ।।
यह छाप अमिट इतिहास पर ।
इसे राज नेता भाँप ले ।।

अन्यथा मचेगा महाकहर ।
भू-पर फैलेगा अब जहर ।।
प्रभावित अनन्तर सब होगा ।
जंगल का शेर या गीदर ।।

❑❑❑

Scanned with OKEN Scanner

जय भारत

जय भारत जन-जन के जननी ।

हर्ष दायिनी दुख हरनी ।।

सागर पगतल धावक रजकण ।

ताज हिमालय तव जननी-।।

माँ का गौरव निज मान रहे ।

माँ यही मुझे वरदान मिले ।।

केसरिया तन का हो वल ।

सादा मन का बल सच्चाई ।।

हरा रंग माता की ममता ।

सदा सिखावत शुभ करनी ।।

हो प्रलय मधुर मुस्कान रहे ।

माँ यही मुझे वरदान मिले ।।

चक्र देख मैं बढ़ूँ कर्म पथ ।

शत्रु दलन करने को

उर तेरे हम एक रहें माँ

यद्यपि धर्म अनेकों

ऋपु दल का मुख म्लान रहे ।

माँ यही मुझे वरदान मिले ।।

झौली पासवान

❑❑❑

Scanned with OKEN Scanner

"बाती"

उस दीप की बाती बनें ।
जिस दीप से सौ दीप जले ।।
खा ठोकड़ें जो गिर गये ।
उसको लगाकर गले चलें ।।

सैकड़ों दीपों की शिखा ।
जग व्याप्त तिमिर को डरा रहा ।।
पछार काली रातों को ।
निर्मल उजाले की ओर चलें ।।

ऑखों में विश्वास
मन में आशा की लड़ी ।।
जिस गीत से महफिल सजे ।
उस गीत की हम धुन बने ।।

निकले तो थे अकेले ।
सैकड़ों के साथ मिले ।।
ले उजाले जनचेतना की ।
अव पूरब की ओर चलें ।।

झौली पासवान

❑❑❑

Scanned with OKEN Scanner

अम्मा

सुनते ही मुर्गा का बाँग ।
जाग गया नन्हा मुन्ना ।।
सुबह हुआ अब जागो अम्मा ।
मुर्गा कुकरू-कू कहता है ।।

अम्मा सोची हुआ बखेरा ।
सुबह काम पर जाना है ।।

किया बहाना अम्मा बोली ।
सो जा बेटा रात अँधेरी ।।
काट खायगा तुम्हें कन्हौआ ।
मुर्गा नहीं कन्हौआ है ।।

नन्हा वालक बड़ा सयाना ।
चाल समझकर यूँ कहा ।।

अम्मा कुकरू! कुकरू !! कुकरू !!!
कोरा हूँ कागज मैं अभी नौनिहाल ।
नन्हा समझकर न मुझको तूँ टाल ।।
एक दिन सजा दूँ मैं भारत का भाल ।

अम्मा कुकरू ! कुकरू !! कुकरू !!!

क से कलम ल से लिखना सिखा दे ।
सच्चे धरातल पर चलना सिखा दे ।।
म से मिटा दूँ मैं शोषण का नाम ।

अम्भा कुकरु ! कुकरु !! कुकरु !!!

न से नमन करूँ अपने वतन को ।
ह से हिला दूँ दलालों के दिल को ।।

Scanned with OKEN Scanner

र से रचा दूँ मैं दुश्मनों से रार ।

अम्मा कुकरू ! कुकरू !! कुकरू !!!

च से चमक जाये जन-जन का भाल ।

द से दरक जाय फरेवी का भाल ।।

र से रचा दूँ मैं नया इतिहास ।

अम्मा कुकरु ! कुकरु !! कुकरु !!!

अ से अन्याय अत्याचार को मिटा दूँ ।

ना से नापाक दिल का होली जला दूँ ।।

ज से जला दूँ घर-घर शिक्षा का चिराग ।

अम्मा कुकरु ! कुकरु !! कुकरु !!!

कलम, नहर, चादर और अनाज पर आधारित बालमन की चतुराई की कल्पना

❑❑❑

Scanned with OKEN Scanner

तूफाँ

बिलखत कत हिय अब न तड़पा ।
नटखट तूफाँ घर वापस जा ।।
ले गया उड़ा छप्पर-छप्पर ।
पर भर न सका तेरा खप्पर ।।

भौरों का बिचलित अंग हुआ ।
भा कानन में बदरंग सुमन ।।
ग्राम शहर भा बीयावान ।
चौपाल बना है श्मशान ।।

फँस गये ततैये काटों में ।
बदला अब शांति सन्नाटे में ।।
पिस गये डाल कितने बिहंग ।
कितनों का खंडित अंग हुआ ।।

इन लघु जीवों का क्या कहना ।
जन-जन का जीवन अस्त-व्यस्त ।।
कितनों के जोड़े टूट गये ।
कितनों के किस्मत फूट गये ।।

टूटा संपर्क संवादों का ।
यातायात सब भंग हुआ ।।
जो जहाँ फँसे वे वहीं रहे ।
हर जगह मचा है त्राहिमाम ।।

कई हवन कुण्ड जल में डूबे ।
शादी के मंडप उजर गये ।।

Scanned with OKEN Scanner

कोई महल-झोपड़ी न छोड़ा ।

बालक का विद्या घर तोड़ा ।।

देख प्रकृति का रूद्र रूप ।

भय बिह्वल जन-जन और भूप ।।

हे समदर्शी न कहर मचा ।

नट-खट तूफाँ घर वापस जा ।।

झौली पासवान

❑❑❑

Scanned with OKEN Scanner

नव किसलय

चौदह बरस का उमर हमारा ।
पढ़ेंगे-लिखेंगे खेलेंगे ।।
कच्ची उमर में सुन मेरी अम्मा ।
शादी की मार नहीं झलेंगे ।।

नव किसलय नव आश हमारा ।
विचार पुराने बदल देंगे ।।
कच्ची उमर में सुन मेरी अम्मा ।
शादी की मार नहीं झेलेंगे ।।

आगे बढ़ता कदम हमारा ।
पीछे न मुड़कर देखेंगे ।।
कच्ची उमर में सुन मेरी अम्मा ।
शादी की मार नहीं झेलेंगे ।।

यह तो है अधिकार हमारा ।
लड़कर जमाने से ले लेंगे ।।
कच्ची उमर में सुन मेरी अम्मा ।
शादी की मार नहीं झेलेंगे

झौली पासवान

❑❑❑

Scanned with OKEN Scanner

प्रतियोगिता

उपयोगिता प्रतियोगिता की ।
बढ़ती रही बढ़ती रहेगी ।।
विस्मय की कोई बात नहीं ।
मानव नित नव-नव आशा किरणें ।।
आसमान से ढूँढ़कर ।
लाते रहे लाते रहेंगे ।।
आवश्यकता आबादी की ।
वह जननी आविष्कार की ।।
भू-पटल से नभ मंडल तक ।
जाती रही जाती रहेगी ।।
शिशु पालना से कब्र तक ।
छाती रही छाती रहेगी ।।
उपलब्धियाँ विज्ञान की ।
बढ़ती रही बढ़ती रहेगी ।।
नभ में मानव उन्मुक्त विचरण ।
करते रहे करते रहेंगे
पर शीघ्र ही नर भूल जायेंगे ।
स्वाद मानस शांति की ।।
हम भूल करते आ रहे ।
उपलब्धता की आड़ में ।।
बढ़ती आबादी आ रही ।
प्रतियोगिता की कतार में ।।

❑❑❑

झौली पासवान

Scanned with OKEN Scanner

संसार सरल

बच्चों का संसार सरल ।
कितना सुन्दर कितना प्यारा ।।
बड़े-बड़े दुर्दान्तों को भी ।
दिल दहलाने वाला ।।

देवों को भी आ गया तरस ।
भू पर पग धाये बार-बार ।।

रावण बधहित राम पधारे ।
कौशल्या मन हरषाया ।।
गोकुल आकर माखन खाये ।
यशुमति नंद दुलारा ।।

गोवर धन नख ऊपर धाये ।
ग्वाल बाल मन हरषाया ।।

आज जरूरत है जग को ।
हे सकल ऋष्टि करतार ।।
छीन रहा है बचपन का सुख ।
कपटपूर्ण मानव व्यवहार ।।

आज मातृ-शिशु शोक मिटा दो ।
भू पर आकर फिर एक बार ।।

झौली पासवान

❑❑❑

Scanned with OKEN Scanner

इकबाल

सूरज की लाली से पहले ।
जग जाता बालक इकबाल ।।
जाड़ा हो पावस या गर्मी ।
सब दिन की यह उसकी चाल ।।

रजिया और रजाक जगाता ।
झट-पट टट्टी से हो आता ।।
घर में रखता सबका ख्याल ।
सब दिन की यह उसकी चाल ।।

सभी बड़ों का आदर करता ।
छोटी बहन को करता प्यार ।।
सबसे मीठी बातें करता ।
सब दिन की यह उसकी चाल ।।

कभी न करता आना कानी ।
आगन्तुक से कभी न डरता ।।
शीष नवाकर पूछता हाल ।
सब दिन की यह उसकी चाल ।।

सदा वर्ग में में अव्वल आता ।
सभी बड़ों का मन हर साता ।।
नन्हा सा बालक इकवाल ।
सब दिन की यह उसकी चाल ।।

झौली पासवान

❑❑❑

Scanned with OKEN Scanner

विषय - सूची

सोलह सुमन द्वितीय खण्ड

क्र. सं.	शीर्षक	पेज नं.	क्र. सं.	शीर्षक	पेज नं.
1.	बंदना	45	19.	भारती	64
2.	प्रेम पुजारी	46	20.	अट्टा-पटा	65
3.	ईर्ष्या	47	21.	आबारा बादल	66
4.	"दो कमल"	48	22.	सूटकेश	67
5.	धरती का छाता	49	23.	समान शिक्षा	68
6.	"मोल"	50	24.	"नारी"	69
7.	सरगम	51	25.	"गुण गहवर"	70-71
8.	नमन्	52	26.	हक छीन लो	72
9.	हंस उलूके	53	27.	राही	73-74
10.	परम पद	54	28.	बिकाऊ	75
11.	धूरी	55	29.	सोलह सुमन	76
12.	काया	56	30.	अपना घर	77
13.	बिखड़ा स्वर	57	31.	संदर्भ	78-79
14.	सिरताज	58	32.	मिश्रित श्रम	80
15.	संकल्प दिवस	59			
16.	स्वदेश	60			
17.	विखड़ी डाली	61			
18.	उसे मत पीने दो	62-63			

Scanned with OKEN Scanner

भाग्य विधाता

खोल मुट्ठी, देख लूँ ।
क्या चीज है कर तेरे ॥
स्वीकारते इस बाणी को ।
लुटते गये बहुतेरे ॥
यह कपट मिथ्याचार है ।
कोई भाग्य का आधार नहीं ॥

वह भाग्य विधाता कर्म है ।
मानवता की पहचान वही ॥
राम कृष्ण की धरती पर ।
कोई धर्म ऐसा और नहीं ॥
कर्म योग से प्राणी जीता ।
कर्म हीन नर है लाचार ॥

हाथ रेखा से न बिगरता ।
बनता किसी का भाल ॥
कर्म योग से हुआ सदा ही ।
जग का ऊँचा भाल ॥
यह विकास की कुंजी है ।
यही सफलता का आधार ॥

झौली पासवा

Scanned with OKEN Scanner

काला नाग ॥

एक पहाड़ी के बगल में गाँव से कोसों दूर ।
जा बसा था एक मुहल्ला बुनकरों का ॥
बिल्कुल बेरोजगार हो गये थे वे सभी ।
कपड़े बुनाई के नये मशीन आनेसे ॥
पट्टेदारी बन गया था उनके जीवन का आधार।
हल चलाता था हलवाहा पहाड़ी के बगल में ।
पीछे रंग-बिरंगी चिड़ियाँ चींची कर उड़ती थी ।
सीत से निकले कीड़े-मकोड़े झटपट चटकर जाती थी ।
सहसा निकला काला नाग पहाड़ी के बगल के झाड़ी से
कर चित्कार चिड़ियाँ सारी उसे देखकर उड़ गयी
मन्द चाल मुर्गे-मुर्गी का देखा काला नाग ।
सरपट दौड़ा उसके पीछे मानो बनकर काल ॥
निकट के तरुवर से उतरे सहसा काले काक ।
मार-मार कर चोंच निरंतर मन्द किया गति नाग ॥
जाकर ठहरे मुर्गे-मुर्गियाँ हलवाहा के पास ।
कातर स्वर में बोला मुर्गा-सुनो भाई हलवाहा ।
हम सब को पीछा करता है नाग भयंकर काला ॥
हम कमजोर हैं बचा लो भैया झट से लट्ठ उठा लो ।
जान बचा तो जीवन भर रहेंगे हम आभारी ॥
तभी नाग देखा हलवाहा सरपट दौड़ा आता ।
भाग चला हलवाहा झटपट डर कर काले नाग से ।

Scanned with OKEN Scanner

कर चित्कार मुर्गे-मुर्गियाँ भी उसके पीछे भागे ।।

काले काक मगर न छोड़े सभी वहाँ भी उड़ते आए ।

मार-मार कर चोंच निरंतर मन्द किया गति नाग ।।

तब तक निकल गये आगे मुर्गे-मुर्गियाँ हलवाहा

हिम्मत करके बोला मुर्गा-सुनों भाई हलवाहा ।

हम छोटे कमजोर हैं पक्षी इसीलिए डर कर भागा ।।

तुम जीवों में श्रेष्ठ हो मानव मोटा-ताजा बलशाली ।

हाथ तेरे मजबूत लट्ठ है फिर भी डर कर क्यों भागा ।।

कभी न सोचा था ऐसा कायर मानव होता है ।

अरे मूर्ख तूँ नहीं जानते करते हो नादानी ।

सॉप नहीं साक्षात् काल न पीने देगा पानी ।।

न जाना यमलोक मुझे न करना है नादानी ।

न भागूँ तो कहो तुम्हीं क्या अपनी जान गवाँ लूँ ।।

इतने में आ गया नाग भी हलवाहे के पास

खड़ा हुआ तन, लाठी लेकर कर्कश स्वर में बोला ।

वहीं ठहर ! मत बढ़ना आगे, हलवाहा लाठी ताना ।।

करने लगा अट्टहास नाग तब हलवाहा घबराया ।

मौत खड़ा है पास तुम्हारे फिर भी अट्टहास करते हो ।।

मूर्ख कहूँ या पागल तुझ को जो ऐसा करते हो ।

न पागल न मूर्ख मैं मनुज के कृतघ्नता पर हँसता हूँ।

अपने ही स्वार्थ में लीन मनुज दानव से भी बत्तर है ।।

जीव श्रेष्ठ कहलाने का अधिकार कहाँ है उसको ।

आज प्रकृति के विनाशलीला में खलनायक मानव है ।।

Scanned with OKEN Scanner

रुग्न पर्यावरण का भी खलनायक मानव है ।

देखा है मैंने भी दुनियाँ जब भी पशु मरता था ।

सैकड़ों गिद्ध उतर कर आते क्षण में चट कर जाता था ।।

पर्यावरण स्वच्छ हो जाता था सब के मन को भाता था ।

देख बिगड़ती हाल आज सरकार खोजती है इसको ।।

सच पूछो तो इसके लिए भी मानव ही उत्तरदायी है ।

माना तेरी बात सही यह केवल मेरी बात नहीं ।

है क्या उपकार तेरा मुझ पर तूँ आज बताओ तो जानूँ ।।

जब सच्चाई को जानूंगा तेरा ही लोहा मानूंगा ।

मानव का जीवन हरते हो फिर उसे कृतध्न तूँ कहते हो ।।

विष का है तुमको अहंकार मानव को दानव कहते हो

सुन बातें पिछले साल की, इसी महीना, इसी खेत में ।

बड़ी यतन और मेहनत से गेहूँ का फसल लगाया था ।।

फफक-फफक कर रोते थे तूँ पति पत्नी इस खेत में ।

कुट्टी-कुट्टी काट दिया चूहों ने पौधों को जड़ से ।।

मैं गुजर रहा था मेड़ से पत्नी भी मेरे साथ थी ।

सुनकर तेरा करूण-क्रंदन पत्नी की आँखे भर आई ।

पूछा कारण तो वह बोली पति देव हमारी बात सुनो ।।

गम में किसान है पति पत्नी चूहों ने फसल बर्बाद किया ।

क्या खायेंगे उनके बच्चे मेहनत पूजी वर्बाद हुआ ।।

हम करें बसेरा इसी खेत में चूहों का आहार करें

पत्नी की कथन मैं मान लिया इस खेत को डेरा बनालिया ।

सब चूहों का आहार किया कुछ चूहे डरकर भाग गये ।।

Scanned with OKEN Scanner

तब तेरा घर आवाद हुआ खलिहान अनाज से भर गया ।

अब देख उदय इतराते हो डंडा से मुझे डराते हो ।।

इतने कृतघ्न तूँ बन गये मुझ को ही दुश्मन बना लिया ।

था बन्द आँख हलवाहा का लाठी भी भू-पर गिर गया ।

बोला - हे बिषधर ! क्षमाकरो मेरे खालिहान में बास करो।।

हर साल पंचमी सावन में अपना घर तुझे बुलाऊँगा ।

नाग पंचमी के शुभदिन मैं लावा-दूध खिलाऊँगा ।।

परिवार सहित दर्शन पाकर मैं धन्य-धन्य हो जाऊँगा ।

हर साल तभी से सावन में श्रद्धा से हर्षित मन से ।

घर-आंगन को लीप-पोत भित्ती में नाग का चित्र बना ।।

लावा-दूध को अर्पित कर विषघर को पूजा जाता है ।।

मिथिला का पावन पर्व यह नाग पंचमी कहलाता है ।

इसदिन सर्पो का दर्शन शुभ संकेत कहलाता है ।

झौली पासवान

❑❑❑

Scanned with OKEN Scanner

चिन्तन

अधिक सोचना बहुत बुरा है ।
बहुत भला है करना काम ।।
कर्म समझकर करते जाओ ।
अच्छा चिन्तन अच्छा काम ।।

जो हुआ हो गया होने दो ।
न उसे दुबारा होने दो ।।
आगे भी कोई शुभक्षण है ।
इसका हो सम्यक् पहचान ।।

आदि शुभग ही अन्त शुभग है ।
सधे लगन से बीच का काम ।।
यथा समय आराम उचित है ।
शाम सबेरे प्रभु का नाम ।।

आज न छूटे कुछ कल हेतु ।
कल भी रहे आज पर ध्यान ।।
आज और कल रहे संतुलित ।
यह विकास का सम्यक् ज्ञान

अधिक सोचना बहुत बुरा है ।
बहुत भला है करना काम ।।
कर्म समझकर करते जाओ ।
अच्छा चिंतन अच्छा काम ।।

झौली पासवान

❑❑❑

Scanned with OKEN Scanner

कातिल

माँ का कलेजा काटकर ।
वह देख लो कातिल चला ।।
रिसता रूधिर को चाटता ।
मातृत्व का दुश्मन चला ।।
है होश कहाँ, बेहोश है ।
उसे नशा का जोश है ।।
कर गोद सूना सैकड़ों ।
खूंखार नर दानव चला ।।
माता की ममता लूटता ।
बन्धुत्व का दुश्मन चला ।।
है ऑख कहाँ अंधा है वह ।
भ्रम है उसे निज दृष्टि का ।।
लालच की डोली पर चढ़ कर ।
स्वार्थ का पुतला चला ।।
माता की ऑचल कर कलंकित ।
देश का दुश्मन चला ।।
बेहतर तो कोई चतुष्पद ।
वह द्वी पदी हैवान चला ।।

झौली पासवान

❑❑❑

Scanned with OKEN Scanner

अनवर

स्तब्ध है दिशाएँ निशीथ हो रहा है ।
कबीले का अनवर किधर खो रहा है ।।

छोड़े सुगम राह भटके चमन से ।
शातिर ये स्वारथ का चोला पहनकर ।।
होकर ये ओझल सबों की नजर से ।
दे रहा चुनौतियाँ युवा जनतंत्र को ।।

आवादी का वहुजन विकल हो रहा है ।
कबीले का अनवर किधर खो रहा है ।।

काली रात अमावश की उसपर घटा ।
न्याय को दफन कर अन्याय को वरणकर ।।
मानव बना है दानव सितम ढ़ा रहा है ।
जन-जन में बढ रहा अनिष्ट की आशंका ।।

गम में बेहोश मानव चित्कार कर रहा है ।
कबीले का अनवर किधर खो रहा है ।।

सपूत हिन्द देश का अवाक् देखते हो क्या ?
निद्रा को तोड़कर दूर कर तन्हाईयाँ ।
स्वीकार ले चुनौतियाँ स्वतंत्रता के कातिल का ।।
अरिदल की भुजा उखाड़ लो तोड़ दोविषदन्त को

हे भारत के भाग्य विधाता जागो वतन के नौजवाँ ।
भारत के इतिहास को तूँ आज नया मोड़ दो ।।

झौली पासवान

❑❑❑

Scanned with OKEN Scanner

विकास का प्रतीक ॥

अपार शक्ति धारिणी,
धरा गगन बिहारिनी,
दयामयी सुधामयी,
अखंड ज्योति धारिनी,

मिला कदम मिला कदम
कदम मिला के चल
एक हैं तो जीत लेंगे
हर सितम ! हर सितम !!

धुन एक, एक कारवाँ,
मशाल हाथ ले चलो
रूको नहीं बढ़े चलो
समर को नया मोर दो

मिटादमन मिटा दमन
दमन मिटा के चल
एक हैं तो जीत लेंगे
हर सितम ! हर सितम !!

हर चमन में हर विकास
का प्रतीक रोशनी
अज्ञानता में ज्ञान का
प्रकाश देती रोशनी

बढ़ा कदम ! बढ़ा कदम !!
कदम बढ़ा के चल ।
एक हैं तो जीत लेंगे
हर सितम ! हर सितम !!

Scanned with OKEN Scanner

अटारी से नीचे

विनय में तुम्हारा खड़ा हूँ तभी से ।
कछारों के ऊपर अटारी से नीचे ।।
चिथरे के भीतर छुपाता हूँ काया ।
आतुर हवाएँ कपाती है काया ।।
ठहरता नहीं पग जमी पर नमी से ।
विनय में तुम्हारा खड़ा हूँ तभी से ।।
सुनो हे दिवाकर सुनो बात मेरी ।
सारे जहाँ में एकल राज तेरी ।।
गरम धूप लाकर जगत को जगाकर ।
हमें भी हँसादे, जगत को हँसा दे ।।
दहलती है काया वयाकी नमी से ।
विनय में तुम्हारा खड़ा हूँ तभी से ।।
ठहरता नहीं मेरे कर में कटोरी ।
घाती जमात काक करता ठिठोली ।।
झर-झर हवाओं से झरते हैं पत्ते ।
दुबके उधर सुगबुगाते न कुत्ते ।।
दाँत किट किटाता है दमकल सरीखे ।
विनय में तुम्हारा खड़ा हूँ तभी से ।।

झौली पासवान

Scanned with OKEN Scanner

नर पिशाच

देखो फैल रहे नर केचुए सर्वत्र ।
हू-ब-हू कुकुर मुत्ते की तरह
विलीन हो रहा इंसानियत
हू-ब-हू ओस की बून्द की तरह ।।

रमते जो वतन के गली-गली ।
हू-ब-हू मसीहा की तरह ।।
कैद है इंसानियत सिकंजे साजिस के ।
पिंजर बद्ध बिहंग की तरह ।।

चुराते अमन-चैन जन-जन का ।
हू-ब-हू नर पिशाच की तरह ।।
स्तब्ध है इंसानियत यहाँ ।
हू-ब-हू अबोध बाल की तहर ।।

न हो पाता पहचान शैतानो इंसानों का ।
हू-ब-हू कोयल काक की तरह ।।
बिफल है कसौटियाँ भी स्वार्थ के घेरे में ।
हू-ब-हू तोता सेमल के फूल की तरह ।।

कब तक रहेंगे ये निरंकुश ।
हू-ब-हू जंगली हुरार की तरह ।।
कब तक बिलखेगी इंसानियत ।
स्वतंत्र देश में भींगी सियार की तरह ।।

झौली पासवा

Scanned with OKEN Scanner

सोलह सुमन द्वितीय खंड

बंदना

न चंदन, न धूप न बाती ।
न पूजा न अर्चना ।।
फिर भी है आशीष की आशा ।
उर अन्तर की बंदना ।।

चरण कमल पर ध्यान अहर्निश ।
पूजा विधि से अनजान ।।
बिगड़ी बात बना दे मैया ।
मैं हूँ बालक नादान ।।

सकल श्रृष्टि तुझ से हे मैया ।
शुभ वरदायिनी भगवती ।।
सब कर्त्ता धर्त्ता तूँ ही माँ ।
मूरत है सारी जगती ।।

माँ ही जाने व्यथा पुत्र की ।
पर को जाने भावना ।।
झौली माँगे दया अहर्निश ।
उर अन्तर की बंदना ।।

झौली पासवान

Scanned with OKEN Scanner

प्रेम पुजारी

गगन में लाल किरण बिखरे रे ।
मंदिर पट खोलो प्रेम पुजारी ।।
कफ, पित, बात की करो सफाई ।
गंगा जल से धुलाई ।।
करो यतन से देव अर्चना ।
देव रहे हरसाई ।।
यह मंदिर पंचमुखी पुजारी ।
दो पहिये की गाड़ी ।।
चलता फिरता यह मंदिर है ।
भ्रमण करे जग सारी ।।
उड़ता है धरती से अम्बर ।
करता प्रेम सगाई ।।
कभी जल पर कभी थल पर मंदिर ।
कभी पहाड़ और झाड़ी में ।।
कभी सपाट धरती पर मंदिर ।
कभी खाई खंडहर में ।।
तूफाँ में भी विचरण करता ।
मन्द-मन्द मुसकाई ।।
जो बोये सो काटे मानव ।
कुटिया महल अँटारी ।।
इस मंदिर में बैठ देवता ।
निरखत है गति सारी ।।
न भींगे, न जले आग में ।
यह तो है अविनाशी ।।

झौली पासवान

Scanned with OKEN Scanner

ईर्ष्या

रे ईर्ष्या तूँ मर जाता ।
या न मरता तो सुधर जाता ।।
औरों को क्षति पहुँचाने को ।
तुम अपना लाभ भुलाते हो ।।
अपना भी ख्याल नहीं रहता ।
बेहोश नजर आते हो ।।
इन्साँ का नकाव पहनते हो ।
हद से ज्यादा बनते हो ।।
मेहनतकश से है बैर तुझे ।
सब उलटी बात समझते हो ।।
दिन बिता रहा घातों में ।
चिकनी चुपड़ी बातों में ।।
बन जा तूँ भी अनुकरणशील ।
बन कर्मशील बन धर्मशील ।।
आनन्द बड़ा ही आयेगा ।
तूँ धीर, वीर कहलायेगा ।।
कितना आनन्द है मेहनतमें ।
इसका अंकण कर पायेगा ।।
भयरहित काम कर पाओगे ।
तब चैन से सो पाओगे ।।
दीनों को गले लगाओगे ।
भगवान का दर्शन पाओगे ।।
तब प्रेम सुधा बरसाओगे ।
यश कीर्ति जगत में पाओगे ।।

झौली पासवान

Scanned with OKEN Scanner

"दो कमल"

दो कमल खिले कीचड़ में ।
जगत मन मोहे रे ।।
वह मन्द-मन्द मुसकाये ।
चदरिया ओढ़े रे ।।

है कमल लाल सारूधिर लाल ।
कण-कण साँसों का तार जुड़ा ।।
हँसता-रोता है गाता है ।
उसका सारा संसार भला ।।

साँसों में पंछी मस्त ।
मगन हो बोले रे ।।
वह मन्द-मन्द मुसकाये ।
चढरिया ओढ़े रे ।।

अन्तस जब कीचड़ सूखा ।
तब लगा कमल मुरझाने ।।
सासों का तार जब टूटा ।
पिंजड़े से पंछी रूठा ।।

उन्मुक्त गगन से ।
उड़ता पंछी बोले रे ।।
सच्चा है सद्काम ।
जगत यह झूठा रे ।।

दो कमल खिले कीचड़ में ।
जगत मन मोहे रे ।।
वह मन्द-मन्द मुसकाये ।
चदरिया ओढ़े रे ।।

झौली पासवान

Scanned with OKEN Scanner

धरती का छाता

सुबह-सुबह जब गौर से देखूँ,
धरती ओढ़े छाता
छाते के भीतर ही सूरज
सब का जीवन दाता
रात चांदनी चाँद सितारे
सब के मन को भाता
विश्व विधाता, विश्व गुरु है
सूरज चांद सितारे
चमक-चमक कर सब को देते
शिक्षा प्यारे-प्यारे
दिन भर जमकर काम करो
विश्राम रात में
मैं चलता हूँ साथ तुम्हारे
दिन और रात में
कहता सूरज सो जाओ
अब मैं भी सोता हूँ
उठो सवेरे जब मैं उठकर
लाल किरण देता हूँ
कहता चंदा जी भर हँस लो
सो जाओ हंसते-हँसते
मैं रखवाली करता हूँ।

झौली पासवान

Scanned with OKEN Scanner

मोल

कलयुग की बात काली ।
दिनकर से है दिवाली ।।
दोनों का मोल एक है ।
दोनों बड़ी निराली ।।

स्वतंत्र का तंत्र में ।
दिक्षित है एक मंत्र में ।।
है राज ताजगी का ।
स्वराज जिन्दगी का ।।

दोनों गुरु महान है ।
सँवारता जहान है ।।
शामक महा प्रपंच का ।
सुशारथी दिग्गन्त का ।।

जिन्दगी विपिन में ।
निशीथ कभी दिन में ।।
दोनों का मोल एक है ।
राज जागरण का निखार जिन्दगी ।।

झौली पासवान

Scanned with OKEN Scanner

सरगम

फूक दो घर जालिमों का ।
जो लूटने आए तुम्हें ।।
मिला दो खाक में मिट्टी ।
जहाँ पर उसकी हो साया ।।

गगन स्वर दुन्दुभी गूंजे ।
बिहँसता भानु पट खोले ।।
कसम माता के आँचल की ।
मिटा दो चैन दुश्मन का ।।

काले काक के स्वर में ।
बन्दे मातरम् की धुन ।।
आज बैरागियों के राग में ।
जय हिन्द का सरगम ।।

जहाँ हो वक्षस्थल उसका ।
बना लो पगतल तूँ अपना ।।
पवन लहरा कर कहता है ।
मिटा दो चैन दुश्मन का ।।

छुपा जो कारगिल में ।
कातिलों को घेर कर मारो ।।
उन नापाक अरमानों को ।
चकनाचूर कर डालो ।।

झौली पासवान

Scanned with OKEN Scanner

नमन्

स्तम्भ बना भू भारत का ।
तब सुरसरि सा पावण चरण ।।
कर कमल से कर्म कलम से ।
जो सज दिया भारत भुवन ।।
निष्प्राण दिल फूंका नव स्वर ।
शत बार नमन शतवार नमन ।।

आज बिहँसता कोटि जिगर ।
लहराता पवन तिरंगा है ।।
अमृत धारा बारसाने वाली ।
गौरव की गाथा गंगा है ।।
शान देश को है तुझ पर ।
शतवार नमन शतवार नमन ।।

थामें लगाम दूफानों में ।
सज गये कटार मयानों में ।।
ठन गया समर बादल बरसा ।
भारत माता का दिल हरसा ।।
गूंजा जयकार इह धरा गगन ।
शत वार नमन शतवार नमन ।।

अमर तेरी कुर्वानी है ।
दुश्मन भी पानी-पानी है ।।
भारत बलिदानों का गहवर ।
कण-कण में राजित तेरा स्वर ।।
ऐसे जो अमर शहीदों का ।
शतवार नमन शतवार नमन ।।

झौली पासवान

Scanned with OKEN Scanner

हंस उलूके

गो धूली बेला टनटन स्वर ।
दिग दिगन्त रवि ओझल हुआ ॥
जब सिमटे जगत प्रपंच ॥
हंस थक नीर पधारे ॥

नभ से उतरी काली समा ।
नशा में हो मतवाली ॥

डट गये राज पहरु चतुर्दिक ।
सावधान हैं सन्तरी देने सलामी ॥
छोड़ दिये सब राहें सुल्ताना की ।
बन्द हुई राहें आम जनता की ॥

काली चादर ओढ़ निकली ।
रात रानी की सवारी ॥

भू-पटल के हर चमन ।
हर ओट में दाखिल हुआ ॥
अमन का उपहार बॉटने ।
रात की दारीकियाँ ॥

भाग्य का वह दीन निकला ।
रात को करने भिखारी ॥

प्रकट हुआ नृप कोष उलूके ।
सब का नयन ओझल हुआ ॥
साँय-साँय करती निशीथ ।
क्षितिज में टिमटिमाते तारे ॥

शासक खड़ा है अब सवेरे ।
रात को करने भिखारी ॥

झौली पासवान

Scanned with OKEN Scanner

परम पद

हर अक्षर हर पद रट डाला ।
सार परम पद नहीं सम्हाला ।।
परिवार ग्राम निज वतन विशाल ।
न प्रेम पियूष, हलाहल बाँटा ।।
गहवर ज्ञान उतर न झंका ।
हाय ! परमपद पत्थड़ आँका ।।
बहु मन मलिन मलिन जग थोड़ा ।
निज दल दलन परम पद छोड़ा ।।
काम कलुष मन खोजत जोड़ा ।
नयन न लौकत चांद चकोरा ।।
सार समय जब हुआ फरार ।
तब कमल हुआ भकरार ।।
मलता हाथ जिगर को थामें ।
भुला रहा मन गढ़ित कथा में ।।
बार-बार तोड़ा हिय जोड़ा ।
सरल गात हिय काठ कठोरा ।।
पढ़ा पाठ पाखंड का न जाना पीड़ परार ।
बन्धुत्व निज वतन का
मर्दन किये सोलह सुमन ।
आदर्श जिसका हर चमन ।।
जो सींचा युग-युग वतन को निज लहू से ।
बॉधकर सिर पर कफन ।
न त्रासदे ऐसे जिगर को
न भंग कर जग का अमन

झौली पासवान

Scanned with OKEN Scanner

धूरी

नर जो प्रेम पाता है ।
जगत में क्या नहीं पाता ।।
सिर पर ताज है उसके ।
जहाँ में राज है उसका ।।

एक हो डगर दो राही ।
जमाना बैर हो सारी ।।
घात ले पास आता है ।
विमुख हो लौट जाता है ।।

धरा पर हो रही पूजा ।
वही भगवान है दूजा ।।
नहीं जीवन बिना इसके ।
नहीं यौवन बिना इसके ।

वही जो प्रेम पाया है ।
वही जीवन भी पाया है ।।
वही धूरी है जीवन का ।
वही धूरी है यौवन का ।।

झौली पासवान

Scanned with OKEN Scanner

काया

अमूल्य काया पाकर न पत्थर बनू मैं ।
न हाथों किसी का खिलौना बनू मैं ।।
आँसू बहाया बहुत दिल को थामें ।
कैसे किसी का सहारा बनू मैं ।।

खोया जिगर मेरा सौगात दे दे ।
गूंगा हूँ मैं मुझ को वाणी तूँ दे दे ।।

बहुत सह चुका अब न कुछ सह सकूँ मैं ।
सारे चिनगारियाँ आज शोला बनू मैं ।।
जीवन हिसाब का पहाड़ा बनू मैं ।
कोई नागन बने तो सपेरा बनू मैं ।।

काटूँ जंजीर कोई वो धार दे दे ।
सहारा में जीवन का बरसात दे दे ।।

कोई भटके जो राही डगर डगमगाये ।
संतरी वतन कोई गुदरी से आये ।।
लगा लूं गले से तनिक न हिचक हो ।
आँसुओं के बदले लहू दे सकूँ मैं ।।

विखड़ा हूँ मैं स्वर नया कोई दे दे ।
जीवन समर को नया मोर दे दे ।।

आयाम पाकर वफा कर सकूँ मैं ।
पाखंडी कोई सच धरातल बनू मैं ।।
सपने सजाया बहुत धैर्य धाये ।
साकार सपने को कैसे करूँ मैं ।।

पाऊँ किरण कोई आधार दे दे ।
सजाये जो सपने हैं साकार कर दे ।।

झौली पासवान

Scanned with OKEN Scanner

बिखड़ा स्वर

सावन में धूल उड़े कानन ।
बढ़ रहा प्रकृति की निष्ठुरता ।।
पावन समीर के बदले में ।
जनमानस को बस पीड़ मिले ।।

कागज का नाव चलाने को ।
चिन्टू पिन्टू का जी ललचे ।।

था कितना सरस समय अपना ।
धन धोर घटा जब छाता था ।।
दौड़-धूप कानन-कानन ।
अद्‌भुत मस्ती छा जाता था ।

काला जामुन लंगड़ा आम ।
भींग-भंग कर खाता था ।।

वह कौन वहाँ ला पकड़ यहाँ ।
दे अबरी-दुबरी हाक लगा ।।
रखवाला थक सो जाता था ।
अपना झोली भर जाता था ।

वाल मंडली बैठ कहीं ।
फिर बड़े मजे से खाता था ।।

झिंगुर का झन-झन स्वर सपना ।
मेंढ़क का टर-टर भा दूभर ।।
दुर्लभ लोरी मजदूरों का ।
बिगड़ा है सब का स्वर भूतल ।।

झौली पासवान

Scanned with OKEN Scanner

सिरताज

प्रथम मुहूर्त्त में देव अर्चना ।
तब हल्का जल-पान ।।
मीठी वाणी बोल प्रिया से ।
गृह से करो पयाण ।।

वंचित रहना सदा कुसंग से ।
निज करतब पहचान ।।
नेकी से करतब करो ।
साथ तेरे भगवान ।।

प्रेम से मिलना सब प्राणी से ।
घृणा कभी न करना ।।
सच्चे राह कठिन होते हैं ।
पर तुम कभी न डरना ।।

हे पुत्र पिता सिरताज ।
कभी तुम ऐसी भूलन करना ।।
रख बदले की भावना ।
न जीते-जीते मरना ।।

झौली पासवान

Scanned with OKEN Scanner

संकल्प दिवस

आज चतुर्दिक चहल-पहल ।
हर नगर झोपड़ी और महल ।।
यह महापर्व सच्चाई का ।
अन्याय दफन करने का ।।

आज विजय का शुभ दिन है ।
श्रद्धा का सुमन चढ़ाने का ।।

हर गली मंत्र स्वर गूंज रहा ।
उन्मुक्त नाचती बालाएँ ।।
कहीं डांडी कहीं नृत्य गरवा ।
कहीं झिझिया झमके गली-गली ।।

आज विजय का शुभदिन है ।
असत्य अँधियारी दूर भगाने का ।।

आज अंत है महिषासुर का ।
उदय दिवस सुर-नर, मुनि का ।।
शुभ मुहूर्त्त है मानव का ।
दानव के शान मिटाने का ।।

आज विजय का शुभ दिन है ।
जन-जन को गले लगाने का ।।

झौली पासवान

Scanned with OKEN Scanner

स्वदेश

कुछ हेतु बना परदेश गया ।
परदेश का भेंट मिला फरही ।।
उस पार गया एक गेट मिला ।
जिसका दरवान महारगड़ी ।।

कुछ भेंट किया कुछ भेंट लिया ।
उस गेट से मैं पकड़ा डगरी ।।
कुछ दूर गया एक फूल मिला ।
जिस फूल का लाल ले जकड़ा ।

डूबा रस में पथ फूल गया ।
भटका मैं कौन धरूँ डगरी ।।
भटके में लगा महाझटका ।
बेखटके पतझड़ आ धमका ।

झड गया फूल रह गया शूल ।
पुनि-पुनि स्वदेश गुण गान करूँ ।।
कत यतन किये न मिला डगरी ।
बंदहाल फिरुँ नगरी-नगरी ।

झौली पासवान

Scanned with OKEN Scanner

बिखड़ी डाली

सहा घोर आघात तूफानी ।
बिखरे डाल चतुर्दिक चार ।।
चारो बिलखे चपल चतुर्दिक ।
ऐसा बिखड़ा मेरा भाल ।।

एक ठौर लिये बदहाल हुए ।
द्वय भय विहवल व्याकुल लाचार ।।
तीसरा चौथा एक साथ ही ।
एक दूजे का देखे हाल ।।

पंचम छूटा उर जननी के ।
भला करे उसका भगवान ।।
प्रथम तीसरा मान ले बैठी ।
कब सुधरेगा तेरा भाल ।।

चक्का जब पथ पर चलता है ।
सतह नहीं सर्वत्र समान ।।
राह कंटीले से जो डरता ।
वह करता पौरुष अपमान ।।

झौली पासवान

Scanned with OKEN Scanner

उसे मत पीने दो

मौसम दोरस दिन ढ़ल चुका था ।
सिर से सिपाही हिल चुका था ।।
अस्ताचल सूरज की लालिमा ।
तरु की फुनगी को छू रहा था ।।

उड़ चले पंख पखेरु भी ।
अपने नीरव की दिशा में ।।
वापस चले चरवाहे भी ।
चारागाह खाली हो रहा था ।।

नशे में चूर आँखे लाल-लाल कर ।
आ रहा था एक साइकिल सवार ।।
साइकिल की गति तेज देखकर ।
हो गये किनारे सब राही ।।

पर सवार को होश नहीं था ।
नहीं नियंत्रण था अपने पर ।।
एक अधेर से जा टकराया ।
दोनो गिरे एक खाई में ।।

चरवाहे सब दौड़े आए ।
दोनों को निकालेखाई से ।।
अब भी नशे में चूर सवार था ।
उसको कोई होश नहीं था ।

सर फट गया था अधेड़ का ।
था खून से लथपथ काया ।।
वह कराहते अंतिम क्षण में ।
यह संदेश सुनाया ।।

पीयो जितना तुम पी सको ।
इन्साँ का जीवन जी सको ।।

Scanned with OKEN Scanner

जीयो औरों को जीने दो ।
मगर उसे मत पीने दो ।

वह पी गया तुम पी न सका ।
इन्साँ का जीवन जी न सका ।।
पीयो जितना तुम पी सको ।
उसे मगर मत पीने दो ।।

झौली पासवान

Scanned with OKEN Scanner

भारती

अपना पराया चिन्तन में ।
अवसर बीते एहसास हुआ ।।
गैरों ने राह दिया मुझ को ।
अपनों ने मुझे बर्वाद किया ।।
मैं नाव बना बरसाती ।
मेरे स्वजन पवन पुरवैया ।।
देकर धक्का अनवरत जो ।
वहा दिया मुझे मजधार में ।।
कम है कितना भी दुआ करूँ ।
मैं टिक गया जिस आड़ में ।।
जात जनित रिस्ता झूठा ।
सच्चा रिस्ता एक भारती ।।
कौन पूजा के पात्र हैं । ?
मैं किसे उतारुँ आरती ?
जात जनित रिस्ता नाता ।
या एक रिस्ता भारती ।।
तट पर खड़ा देखूँ धरा ।
बस एक रिस्ता भारती ।।

झौली पासवान

❑❑❑

Scanned with OKEN Scanner

अट्टा-पटा

रात के अन्हरिया में चकमक तारे ।
रात के इजोरिया में झिलमिल तारे ।।
कहती है दादी माँ अट्टापटा ।
ध्रुवतारा का बताओ दिशा ।।

रात के इजोरिया में झिलमिल तारे ।
चंदा से बात करे झिल मिल तारे ।।
कहती है गुड़िया सुनो दादी माँ ।
उत्तर दिशा में ध्रुव तारा ।।

कैसी अमावश की रात काली काली ।
पूनम की रात देखो कितनी निराली ।।
वाह ! मेरे आंगन की अद्‌भुत छटा ।
कहती है दादी माँ अट्टा-पटा ।।

हैं असंख्य तारे सटे आसपास में ।
दूध जैसा उजला नहर आकाश में ।।
कहती है दादी माँ अट्टा पटा ।
बच्चों यही है आकाश गंगा ।।

एक समूह में तारे सात ।
सत भैंयाँ कहलाता है ।।
सूरज से सब दूर हैं तारे ।
लगते छोटे न्योर-न्यारे ।।

नभ मंडल में जो ग्रह हैं नौ ।
सौ परिवार कहलाता है ।।
दिन में देता सूर्य उजाला ।
रात में चांद चांदनी लाता है ।।

झौली पासवान

Scanned with OKEN Scanner

आवारा बादल

नीलाकाश धुआँकश कर्कश ।
दिनकर की आभा मन्द हुआ ।।
जब चले बुलाने वर्षा ऋतु को ।
आवारा बादल आकाश ।।
चांचर से चतुष्पद हरके ।
आकाश में ठनका, ठनका ।।
सहम गये हर नीड़ में चूजे ।
बना विरान सा पगडंडी ।।
सूरज खेले आँख मिचौनी ।
मस्त जलज संग नीलाकाश ।।
एहसास हुआ सारस को ।
उड़ चले वे निज नीरव को ।।
पेड़ों के पत्ते पर झर-झर ।
पड़ने लगे जल के फुहार ।।
शांत हो गया दिशा चतुर्दिक ।
सिहर सिहर सिहका बसात ।।
मन शीतल हुआ सभी का ।
अब हुआ अंत गर्मी का ।।
उमड़े सब ताल-तलैया ।
गली-गली कीचड़-कीचड़ ।।
चहुँ ओर है पानी-पानी ।
लगता है चकमक चानी ।।
दादुर का मन हरसाया ।
झींगुर झन गीत सुनाया ।।
खेतिहरों का किस्मत जागा ।
जन-जन का मन हरसाया ।।
शुरु हुआ धन रोपनी ।
हर्षित सास-ननद और गोतनी ।।
सब हैं भाव विभोगी ।
गाते झूम-झूम कर लोरी ।।

झौली पासवान

Scanned with OKEN Scanner

सूटकेश

छत के ऊपर योगी भागा ।
पीछे छूटा उसका योग ।।
योग चुराया जब चरवाहा ।
तब योगी को पकड़ा रोग ।।

एक हितैषी वैद्य बुलाया ।
जिसका बिल्कुल नकली वेश ।।
नारी के बदले टटोलता ।
चोर, चोर का सूटकेश ।।

तब तक आई एक सिपाही ।
बड़ी-बड़ी थी उसकी दाढ़ी ।।
उसकी आँखें घूर रही थीं ।
पड़ा सामने का सूटकेश ।।

दर्शक जन की भीड़ लगी थी ।
सब की आँखें वहीं गड़ी थीं ।।
भीड़ से आयी एक आवाज ।
सभी चोर हैं पकड़ो यार ।।

चोर न पकड़े कभी चोर को ।
सब करते हैं गोटी लाल ।।
गहरी खाई खोद रहा है ।
इन लोगों की दुलमुल चाल ।।

झौली पासवान

Scanned with OKEN Scanner

समान शिक्षा

ये बच्चे स्कूल न जाते ।
मानव उतरा चांद पर ।।
नीचें झांकें गौर से देखें ।
टोपी हावी पतलून पर ।।

वे पाते गुणवत्ता शिक्षा ।
बड़े-बड़े स्कूल में ।।
ये बच्चें क्यों पेड़ के नीचे ।
लिपटे रहते धूल में ।।

करे ठिठोली ये सब मिलकर ।
समता के अधिकार का ।।
मनसा सही नहीं दिखता ।
खानापूरी सरकार का ।।

गुणवत्ता शिक्षा का भाषण ।
बहुत हो गया बन्द करो ।।
सत्रारंभ से पहले ही ।
पाठ्य पुस्तक का प्रबंध करो ।।

सभी सुमन हो एक चमन में ।
और बढ़ेगा देश की शान ।।
मंत्री या भंगी संतान ।
सब की शिक्षा एक समान ।।

झौली पासवान

Scanned with OKEN Scanner

नारी

कहीं माता कहीं ममता हो ।
कही प्रेम रूप वर्षा रानी ।।
आदि करूण हो अन्त रूद्र हो ।
नारी सकल श्रृष्टि सयानी ।।

त्याग तपस्या बलिदानों का ।
त्रिगुण समन्वित शाक्ति महान ।।
ब्रह्मा विष्णु महेश सनकादिक ।
तुम संग पाये कीर्ति महान ।।

लक्ष्मी रूप लावण्यमयी ।
रूद्र रूप काली अवतार ।।
ब्रह्मा संग ब्रह्मणी बनकर ।
युग-युग बाँटा ज्ञान प्रकाश ।।

कहीं राधा कहीं सीता हो ।
कहीं सत्यवान संग सावित्री ।।
ऋतु बसंत में तुम रमणी हो ।
तन पर नव चूनर धानी ।।

मन कर्म वचसा पति अनुगामिनी
जीवन गार्हस्थ्य में भामिनी ।।
दुख में सुख अनुभूति करे जो ।
धन्य-धन्य वह नारी ।।

झौली पासवान

Scanned with OKEN Scanner

"गुण गहवर"

गंग विहंग अशोक मधुमासा ।
जित देखत तित बढ़त पिपाशा ।।
जटा जूट त्रिपुरारि बह गंगा ।
आसन गरुर पीताम्बर धारी ।।
सिया राम के पंथ निहारे ।
वन अशोक में प्राण हिय धारे ।।
कामदेव आगम मधुमाशा ।
बढ़त प्रियतमा प्रियतम आशा ।।
भारत के वरदान शुभ गंगा ।
भारत का दृग दूर विहंगा ।।
छाया शीत अशोक गुण गहवर ।
मधुमास समर का आलिंगण ।।
छँट जाय प्रदूषण का बादल ।
रूक सके प्रदूषण गंगा जल ।।
बनी रहे जन-जन की आशा ।
यह भारत का भाग्य विधाता ।।
सुखमय वसंत हो वीरों का ।
ऊँचा उसका अरमान रहे ।।
हो हरा भरा वन का आँचल ।
छँट जाय प्रदूषण का बादल ।।
कलरव विहंग का सदा रहे ।

Scanned with OKEN Scanner

हिन्दी का मस्तक तना रहे ।।

जन-जन का इसपर ध्यान रहे ।

सदा हिन्द का शान रहे ।।

झौली पासवान

Scanned with OKEN Scanner

हक छीन लो

मैं साथ हूँ कि हो सुबह ।
तुम कल हमारे साथ रहो ।।
सामन्त करे आराम यहाँ ।
तुम सदा उसका यजमान रहो ।।

सब लेते रहे नाम तुम्हारा ।
उपहास भरी जुबानों से ।।
तुम बने रहो आखेट उसीका ।
वैशाखियों के बहाने से ।।

बलराम उठो आगे बढ़ो ।
हक है कोई एहसान नहीं ।।
याचक नहीं साधक बनो ।
हक आगे बढ़कर छीन लो ।

उनचास वर्ष में न मिल पाया ।
बॉछित हक अधिकार तुझे ।।
मकझोर दो उस बंधन को ।
जिसने तुझे कमजोर किया ।।

कोरी कल्पना यह तब तलक ।
जब तक अशिक्षा व्याप्त है ।।
जो भी मिल सका प्रकाश तुझे ।
एक दूसरे को बाँट दो ।।

झौली पासवान

Scanned with OKEN Scanner

राही (1)

न गम है भूखों मरने का ।
न फिकर जिगर के पीर का ।।
चोटी की पानी एँड़ी पर ।
मैं हूँ राही ततवीर का ।।

ताला मेरे तकदीर का ।
खुले कभी या न खुले ।।

खानावदोश सी जिन्दगी ।
सब कहने लगे पागल मुझे ।।
कोई राह नया देता नहीं ।
आयाम नया सब पीड़ का ।।

है बर्फ में भी उष्णता ।
प्यासा हूँ कब से नीर का ।।

सबका प्रहार मैं सहता हूँ ।
जिसका जैसा मै कहता हूँ ।।
दिल की तमन्ना दिल में समेटे ।
कभी नहीं किसी से कहता हूँ ।।

इस काल तंत्र के बन्धन को ।
जाने कोई या न जाने ।।

सब सुमन खिले एक कानन में ।
एक ही माली के आनन में ।।
सब एक थे बचसा मगर ।

Scanned with OKEN Scanner

बिखड़े सुमन ताकीत न की ।

मैं ढूंढ़ रहा जिस माली को ।

वह मिले कभी या न मिले ।।

Scanned with OKEN Scanner

बिकाऊ

बिकती जमीं आसमाँ बिक रहा है ।
दवा के बहाने सिर दर्द बिक रहा है ।
बिसात ही क्या है जन साधारण का ।
गली-गली भगवान का वरदान बिक रहा है ।
बड़े शान से बिक रहा है क्षीर संग पानी ।
घी संग डालडा की बात है पुरानी ।।
बिकती है न्याय नासूर नीति बिक रहा है ।
नोटों की शान से आदर्श बिक रहा है ।।
बच्चे जो देश के भविष्य, बिक रहे हैं ।
पोषाहार अस्पताल का बाजार बिक रहा है ।।
बड़े शान से बिक रहे हैं प्रश्न-पत्र बाजार में ।
दुल्हे की विक्री में प्रतियोगिता की बाजार है ।।
तस्करी नर मुंडों की मुद्दतों से हो रही है ।
मानव का अंग-अंग बाजार बिक रहा है ।।
इंसान अब हैवानियत के हाथ बिकर रहा है ।
फूल माले में गोलियों का हार बिक रहा है ।।
नकावपोश जालियों की बातें बिक रही हैं ।
जहाँ में बेकशों की जिन्दगी उधार बिक रहा है ।।
विकते हैं बाल बालिकाएँ बिक रही हैं ।
शांति के बहाने समन बिक रहा है ।।
तरल के बहाने गरल बिक रहा है ।
शल्य के बहाने जिगर बिक रहा है ।।
हर चीजें बिकाऊ हो गई हैं ।
बेटा संग बाप का अरमान बिक रहा है ।।

झौली पासवान

Scanned with OKEN Scanner

सोलह सुमन

बहुत दिनों के बाद माली ।
आए बिहँसते बाग में ।।
जो जोड़ते सोलह सुमन ।
कभी तोड़ना जाना नहीं ।।

चौंक ठठे हैं कातिलें ।
भारत भुवन सम्मान की ।
जो तोड़ते सोलह सुमन ।
कभी जोड़ना जाना नहीं ।।

रहा अहर्निश स्वार्थरत ।
परमार्थ को जाना नहीं ।।
दर्पवश जो सूर बनकर ।
इंसान को माना नहीं ।।

श्रम से ही काला बना तन ।
गुदरियों के लाल की ।।
क्यों कातिले इंसान की ।
इन्सान का हक न मिला ।।

ठुकरा कर सत्य अहिंसा को ।
मत दो हिंसा को मंत्रणा ।।
जयघोष चतुर्दिक श्रवण करो ।
जय भीम, भगत जय बापू की ।

Scanned with OKEN Scanner

अपना घर

आपना घर है शांति निकेतन
न जड़ कोई, सब हैं चेतन
नहीं द्वेष है, नहीं राग है
अपना यह सौभाग्य है ।।
सब के सब सुख-दुख का साथी ।
बच्चे यहाँ भविष्य की थाती ।।
बेटा-बेटी सब संतान हैं ।
अपना यह सौभाग्य है ।।
नहीं सताती दुख की चिन्ता ।
करते नहीं किसी की निन्दा ।।
मेहनत अपनी शान है ।
अपना यह सौभाग्य है ।।
अनुशासन का होता पालन ।
यहाँ न कोई कोप का भाजन ।।
सब की यहाँ सुनी जाती है ।
अपना यह सौभाग्य है ।
स्वर्ग से सुन्दर है अपना घर ।
भाग्य बंधा है कर्म सूत्र में ।।
सभी बंधे है एक सूत्र में ।
अपना यह सौभाग्य है ।।

झौली पासवान

Scanned with OKEN Scanner

संदर्भ

सूरज न बदले, चांद न बदला
मौसम बदलता है ।
हर कालखंड में मानव का,
संदर्भ बदलता है ।।
परिवर्त्तनशील है यह दुनियाँ ।।
गतिशील है यह दुनियाँ ।।
कल आग उगलती थी धरती ।
उड़ता था धूल आकाश में ।।
वीरान था कानन-कानन ।
अधीर था जीवन जन-जन का ।।
तब झुलस गये थे दुर्वादल ।
थे दूर कहीं काले बादल ।।
आज लवालव नदियाँ सारी ।
हँसती कलियाँ प्यारी-प्यारी ।।
कालीन बिछा दुर्वादल का ।
हरा-भरा वन का आँचला ।।
धरती हो रही निहाल ।
आज सँवरे हैं सब के भाल ।।
अपना शुभदिन जब आया ।
तब सब बन गये हितैषी ।।
सब अपने बने पड़ोसी ।
यश फैल रहा दसकोसी ।।
सब हाँ में हाँ कहते थे ।

Scanned with OKEN Scanner

गौरव की गाथा गाते थे ।।

अपना दुर्दिन जब आया ।

अपने बन गये पराये ।।

कई दोष गिनाये मुझमें ।

संबंध निकतम टूटे ।।

बन्धुत्व का रिस्ता टूटा ।

निज जन भी मुझ से रूठे ।।

गुलाम था जब यह वतन ।

सहमें थे सबके मन-वचन ।।

हर पल अनिष्ट की आशंका ।

प्रतिबंधित सब के मन वचन ।।

आज आजाद हैं हम सभी ।

है मन बुलन्द है स्वर बुलन्द ।।

❑❑❑

Scanned with OKEN Scanner

मिश्रित श्रम

संरक्षित संरक्षण ।
संबर्धन समभाव ।।
वर्ग विच्छेद वर्ग संगठन ।
समर्थन मानववाद ।।

निज पीड़ा अनुमान कर ।
जानो पीड़ परार ।।
जन-जन का दिल जोड़कर ।
भोगों मूल अधिकार ।।

जब तक फूटे हो डरोगे ।
जब तक तंद्रिल हो डरोगे ।।
मिट जायेगी तन्द्रा निद्रा ।
चमक उठेगा सब का भाल ।।

प्रेम सुधा से चलो मिटा दें ।
दीन दुखी का प्यास ।।
मिश्रित श्रम से बने सुनहला ।
भारत का इतिहास ।।

❑❑❑

Scanned with OKEN Scanner

सोलह सुमन पदावली मेरी प्रथम कृति है। इस हिन्दी पदावली के लिए मुझे सन् 2021 में दलित साहित्य अकादमी दिल्ली द्वारा — अम्बेडकर फेलोशिप सम्मान से सम्मानित किया गया। यद्यपि पुस्तक मे सोलह सुमन प्रथम एवं द्वितीय खंड अंकित है लेकिन पृष्ठ संख्या मात्र 80 है कविताओं की संख्या- 64 है। प्रथम खंड के पदों की क्रम-संख्या तो अंकित है लेकिन द्वितीय खंड के कविताओं की क्रम संख्या अंकित नहीं है। मेरे विचार से सभी कविताएँ सारगर्भित एवं प्रेरणादायी हैं लेकिन तकनीकी गलतियों की सुधार एवं पुस्तक कम से कम 100 पृष्ठों से अधिक का हो इसके लिए अगला संस्करण शोध करके प्रकाशित करवाना आवश्यक प्रतीत होता है।

समीक्षक महोदय अपने सुझाव से मुझे उपकृत करने कृपा करेंगे।

कौली पासवान
30/4/26

Scanned with OKEN Scanner